त्रिदिब कुमार चौधरी

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली
दिसम्बर 2004

त्रिदिब कुमार चौधरी

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली
दिसम्बर, 2004

9(3)–लार्डिस (पार्लि.)/2004

© 2004, लोक सभा सचिवालय

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियम (ग्यारहवां संस्करण) के नियम 382 के अंतर्गत प्रकाशित तथा जैनको आर्ट इंडिया, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

आमुख

आधुनिक भारत के उत्कृष्ट नेता, त्रिदिब कुमार चौधरी बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी थे। वह जाने-माने प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी, निर्भीक राजनीतिक कार्यकर्त्ता, संसदविद्, समर्पित क्रांतिकारी, श्रमिक वर्ग के समर्थक और बहुसर्जक लेखक थे। यह कृतज्ञ राष्ट्र 3 दिसम्बर, 2004 को श्री त्रिदिब चौधरी की स्मृति में सम्मान व्यक्त कर रहा है जब भारत के माननीय उपराष्ट्रपति तथा राज्य सभा के सभापति, श्री भैरो सिंह शेखावत संसद भवन में उनके चित्र का अनावरण करेंगे। हम माननीय अध्यक्ष, श्री सोमनाथ चटर्जी के आभारी हैं जिन्होंने इस समारोह के आयोजन में प्रेरक मार्गदर्शन किया है।

प्रसिद्ध चित्रकार श्री अजय साहा द्वारा बनाया गया यह चित्र पश्चिम बंगाल सरकार में सिंचाई मंत्री श्री अमलेन्दर लाल राय ने भेंट किया है। यह चित्र भेंट करने के लिए हम उनके आभारी हैं। इस पुस्तिका में सम्मिलित अनेक फोटो तथा त्रिदिब कुमार चौधरी के बारे में कुछ प्रासंगिक साहित्य हमें प्रदान करने के लिए हम संसद सदस्य, श्री अवनी राय का भी धन्यवाद करते हैं।

इस अवसर पर लोक सभा सचिवालय भी यह पुस्तिका प्रकाशित कर रहा है जिसमें त्रिदिब चौधरी का जीवनवृत्त और उनके कुछ चुनिंदा फोटो दिए गए हैं। हमें आशा है कि यह प्रकाशन उपयोगी और ज्ञानप्रद सिद्ध होगा।

नई दिल्ली,
दिसम्बर, 2004

गुरदीप चन्द मलहोत्रा,
महासचिव,
लोक सभा।

विषय-सूची

आमुख .... (i)

त्रिदिब कुमार चौधरी—जीवनवृत्त

प्रारंभिक जीवन 1

साहसी स्वतंत्रता सेनानी 2

क्रांतिकारी विचारधारा का प्रभाव 2

राजनीतिक दर्शन 3

रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी के साथ उनका संबंध 4

प्रतिष्ठित संसदविद् 5

प्रख्यात मजदूर संघ नेता 7

साहित्यिक उपलब्धियां 7

निधन और श्रद्धांजलि 8

चित्रात्मक झांकी 9

त्रिदिब कुमार चौधरी

–जीवनवृत्त–

त्रिदिब कुमार चौधरी
(13 दिसम्बर 1911 – 21 दिसम्बर 1997)

वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी, उत्कृष्ट सांसद और महान रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट नेता त्रिदिब कुमार चौधरी भारतीय संसदीय राजनीति के स्वर्ण युग के प्रतीक थे। वह जीवनपर्यन्त श्रमिकों, कृषकों और समाज के कमजोर वर्गों के कल्याण हेतु निरंतर कार्य करते रहे। मजदूर संघ के नेता के रूप में वह सदैव श्रमिकों के अधिकारों के लिए लड़े। वह एक सहज वक्ता और बहुसर्जक लेखक भी थे। देश की सेवा में अपनी एकाग्र निष्ठा के कारण उन्होंने राष्ट्र-जीवन में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था।

प्रारंभिक जीवन

त्रिदिब कुमार चौधरी का जन्म 13 दिसम्बर, 1911 को ढाका (जो अब बंगलादेश में है) में हुआ था। उनके पिता का नाम गणेश गोविन्द चौधरी और माता का नाम तरूबाला देवी था। उनके पिता उत्तरी बंगाल (जो अब बंगलादेश में है) के पबना जिले में हरिपुर के एक प्रसिद्ध चौधरी परिवार से थे। हरिपुर के चौधरी मध्यवर्गीय जमींदार और वकील थे। गणेश गोविन्द ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की विशिष्ट उपाधि प्राप्त की थी और उनकी साहित्य में गहरी रुचि थी। हालांकि उन्होंने सरकारी सेवा में प्रवेश पा लिया था, तथापि, उन्होंने उन दिनों के विकासशील बंगला साहित्यिक आंदोलनों से स्वयं को संबद्ध रखने का सदैव प्रयास किया और अपने परिवार तथा बच्चों को साहित्यिक गतिविधियों में संलग्न रहने के लिए प्रेरित किया। वर्ष 1912 में गणेश गोविन्द की नियुक्ति मुर्शिदाबाद जिले में हो गई। तभी से वह मुर्शिदाबाद में बस गए और अंततोगत्वा बरहामपुर में अपना स्थायी आवास बनाया।

इस प्रकार, त्रिदिब कुमार ने मुर्शिदाबाद के विभिन्न हाई स्कूलों में शिक्षा प्राप्त की। परन्तु उन्होंने बरहामपुर के कृष्णनाथ कालेजिएट स्कूल में अपेक्षाकृत अधिक समय तक अध्ययन किया। चूंकि वह पढ़ाई-लिखाई में सदैव आगे रहे, इसलिए उन्होंने वर्ष 1926 में इस स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उसके बाद उन्होंने कृष्णनाथ कालेज में प्रवेश लिया और कला विषय में इंटरमीडिएट की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

त्रिदिब कुमार की किशोरावस्था और आरंभिक युवावस्था के वर्षों में ही महात्मा गांधी के नेतृत्व में शुरू किए गए असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के रूप में भारत में 1920 और 1930 के वर्षों में साम्राज्यवाद विरोधी और राष्ट्रवादी जन आंदोलन भड़का। अनुशीलन समिति, जुगांतर पार्टी, हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी आदि के नेतृत्व में भूमिगत राष्ट्रीय क्रांतिकारी आंदोलन भी पुनर्जीवित हो उठा। परिवार

में अपने पिता से प्राप्त साहित्यिक कार्यों की प्रेरणा और उन दिनों शिक्षित मध्यवर्ग में व्याप्त राष्ट्रवादी और देश भक्तिपूर्ण सांस्कृतिक परिवेश ने त्रिदिब कुमार के मन-मस्तिष्क को राष्ट्रवादी सांचे में ढाल दिया। अपने कालेज की शिक्षा पूर्ण करने से पहले ही वह राष्ट्रीय क्रांतिकारी आंदोलन में कूद चुके थे। वस्तुतः, उन्होंने नजरबंदी के दौरान ही कलकत्ता विश्वविद्यालय से 1933 में स्नातक की और 1936 में अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण की थी।

साहसी स्वतंत्रता सेनानी

वर्ष 1930 तक त्रिदिब कुमार को एक स्थानीय कांग्रेस संगठन के कार्यकर्त्ता के रूप में राष्ट्रवादी आंदोलन में शामिल किया गया और यद्यपि वह हाई स्कूल के छात्र थे फिर भी उन्हें अनुशीलन समिति—उस समय का एक भूमिगत क्रांतिकारी संगठन, जो साम्राज्यवादी ब्रिटिश शासन को भारत से जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए सशस्त्र संघर्ष में विश्वास रखता था, के सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में भर्ती कर लिया गया। इसी बीच वह भूमिगत आंदोलन के जाने-माने क्रांतिकारी नेताओं यथा प्रतुल गांगुली, महाराज त्रैलोक्य चक्रवर्ती, रवीन्द्र मोहन सेन और अन्य के व्यक्तिगत संपर्क में आए। वह कांग्रेस गठबंधन और क्रांतिकारी कार्य दोनों के संबंध में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के भी निकट आए। वर्ष 1928 से 1930 के बीच, त्रिदिब कुमार बरहामपुर शहर में क्रांतिकारी आंदोलन की स्थानीय इकाई में इसके युवा आयोजकों और नेताओं में से एक के रूप में पहले से ही सक्रिय रूप से संबद्ध थे। वह अप्रैल 1930 में जिले के बंगला क्रांतिकारियों द्वारा चित्तगांग में शस्त्रागार पर डाले गए छापे और ब्रिटिश सरकार द्वारा संदिग्ध क्रांतिकारियों को जेल में नजरबंद करने हेतु बंगाल अध्यादेश (जिसे बाद में 1930 का बंगाल आपराधिक विधि संशोधन अधिनियम के रूप में अधिनियमित किया गया) के प्रख्यापन के तुरंत बाद वर्ष 1930 में भूमिगत हो गए। उन्हें वर्ष 1931 में गिरफ्तार किया गया और 1937 तक खड़गपुर के निकट बंगाल के मिदनापुर जिले में हिजली नजरबंद शिविर में और उसके बाद राजपूताना के देवली नजरबंद शिविर में नजरबंद रखा गया।

क्रांतिकारी विचारधारा का प्रभाव

1930 के दशक के अंतिम वर्षों में नजरबंदी की यह अवधि क्रांतिकारियों के लिए खुद को शिक्षित करने और विचारधारा के स्तर पर बदलाव की अवधि थी। इनमें से अधिकांश, जिनमें त्रिदिब कुमार भी थे, वर्षों के अध्ययन और लंबी राजनैतिक चर्चा के पश्चात् ऐसे पक्के समाजवादी और मार्क्सवादी-लेनिनवादी के रूप में रिहा हुए जिनका वर्ग संघर्ष और जनांदोलन में विश्वास दृढ़ हो गया था। 1937 में नजरबंदी से मुक्त होकर त्रिदिब कुमार ने बंगाल कांग्रेस संसदीय दल के एक सचिव के रूप

में लगभग दो वर्षों तक कार्य किया। परन्तु, उस समय उनकी मुख्य राजनीतिक गतिविधि, अनुशीलन समिति को एक जन एवं वर्ग संघर्षोन्मुख मार्क्सवादी पार्टी के रूप में परिवर्तित करने से संबंधित रही।

मार्क्सवादी तथा समाजवादी कार्यक्रम को विचारधारा के रूप में स्वीकार कर लेने के पश्चात्, अनुशीलन समिति के नेताओं ने सर्वप्रथम तत्कालीन नवगठित कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (सी.एस.पी.) में शामिल होने का निर्णय किया। यह वर्ष 1937-38 की बात थी। लेकिन शीघ्र ही, ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध तत्काल संघर्ष छेड़ने के एक कार्यक्रम, जिसकी वकालत आसन्न द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने की थी, के प्रति अपनाए जाने वाले रुख और कांग्रेस नेतृत्व के साथ एकता बनाए रखने के रुख के मामले पर अनुशीलन समिति के मार्क्सवादियों और सी.एस.पी. के नेतृत्व के बीच मतभेद हो गया। अनुशीलन मार्क्सवादियों ने सी.एस.पी. के रवैये के बजाय, नेताजी सुभाषचंद्र बोस के अडिग संघर्ष और तत्काल कार्रवाई के रवैये का खुलकर समर्थन किया। इस बीच, 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हो गया और सी.एस.पी. तथा अनुशीलन मार्क्सवादियों के बीच राजनैतिक मतभेद और गहरा हो गया। अंततः मार्च 1940 में अनुशीलन मार्क्सवादी, कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी से अलग हो गए और रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी के नाम से एक स्वतंत्र, गैर-परम्परावादी राजनीतिक दल का गठन किया जो कम्युनिस्ट पार्टी और कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी दोनों से ही अलग था। त्रिदिब कुमार ने रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी (आर एस पी) के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इसके तुरंत बाद, 1940 में त्रिदिब कुमार और नवगठित आर एस पी के अनेक अन्य नेताओं तथा अनुशीलन मार्क्सवादियों को गिरफ्तार कर लिया गया। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के साथ भारत अभिरक्षा नियमों (डिफेंस आफ इंडिया रूल्स) के तहत नजरबंद कर दिया। उनके ऊपर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ युद्ध-विरोधी और नेताजी की तात्कालिक कार्रवाई का समर्थन करने का मुख्य आरोप लगाया गया। त्रिदिब कुमार को युद्ध काल के दौरान 1940 से 1946 तक सुरक्षा कैदी के रूप में हिजली विशेष कारागार और ढाका तथा दम-दम केंद्रीय कारागारों में नजरबंद रखा गया।

राजनीतिक दर्शन

त्रिदिब चौधरी ने राजनीति में समाजवादी श्रमजीवी वर्ग के शासन की मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा की वकालत की, किंतु साथ ही उन्होंने लोकतांत्रिक और मानवीय मूल्यों का दृढ़ सम्मान किया। उनके अनुसार, समाजवाद का अर्थ समाज के ऐसे आर्थिक संगठन से है जिसमें सभी सामाजिक उत्पादक बलों को लोक सामाजिक स्वामित्व के तहत लाया जाता है और जिसमें उत्पादन सामाजिक स्तर पर योजनाबद्ध,

नियंत्रित और सामाजिक प्राथमिकताओं के अनुसार समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करने की दिशा में होता है, न कि व्यक्तिगत लाभ के लिए। समाजवाद के अंतर्गत, समाज के समस्त सदस्यों को पूर्ण जीवन जीने के लिए एक समान मानवाधिकारों को पूरी मान्यता है, किंतु किसी आय पर (अर्थात् सामूहिक रूप से उत्पादित सामाजिक लाभांश या निवल राष्ट्रीय उत्पाद में भागीदारी का अधिकार) प्रत्येक व्यक्ति को अपने कार्य—सामाजिक रूप से आवश्यक श्रम—के निष्पादन के माध्यम से अधिकार अर्जित करना है न कि सामाजिक उत्पादन के साधनों के स्वामित्व के अधिकार के आधार पर। एक समर्पित कम्युनिस्ट के रूप में उनका विश्वास था कि 'जो नहीं कमाएगा, वह नहीं खाएगा' समाजवाद का मूलभूत सिद्धांत है। उनका यह मत था कि किराए, ब्याज, लाभ, संयुक्त स्टाक कम्पनियों के शेयरों पर लाभांश, आदि के रूप में निजी सम्पत्ति के स्वामित्व से प्राप्त अनर्जित निजी आय के लिए समाजवादी आर्थिक प्रणाली में कोई स्थान नहीं है।

त्रिदिब चौधरी इस बात से पूरी तरह आश्वस्त थे कि निजी सम्पत्ति की प्रणाली आधारित अर्थव्यवस्था उसी प्रकार समाजवाद की विरोधी है जिस प्रकार समाजवाद निजी सम्पत्ति प्रणाली का विरोधी है। उनके अनुसार, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के रूप में पूंजीवाद अनिवार्यत: ऐसी निजी सम्पत्ति के अनुल्लंघनीय अधिकार पर आधारित है जिसे स्वैच्छिक रूप से त्यागने या मुक्त बाजार में विनिमय या न्यायसंगत प्रतिपूर्ति की अदायगी (यदि वह राज्य द्वारा अधिग्रहीत की गई हो) के बिना उसके आधिकारिक स्वामी से अलग नहीं किया जा सकता। प्रत्येक पूंजीवादी राज्य का मूलभूत नियम अपने प्रत्येक नागरिक को निजी सम्पत्ति के अधिकार की गारंटी देता है (बशर्ते कि वह किसी सम्पत्ति का स्वामी हो)। उनके विचार से, जब तक इस प्रकार का मूलभूत नियम मौजूद है, अपने सही अर्थों में समाजवाद दूर की कौड़ी ही बना रहेगा।

रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी के साथ उनका संबंध

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, त्रिदिब कुमार चौधरी ने रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी के महासचिव के रूप में इसे भारत में ऐसी गैर-पारंपरिक मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी के रूप में सशक्त बनाने में अपनी भूमिका निभाई जिसकी कोई विदेशी, किसी अन्य दल से वैचारिक या राजनीतिक संबद्धता नहीं थी। त्रिदिब चौधरी के अनुसार, लेनिन की सुप्रसिद्ध उक्ति, 'क्रांतिकारी सिद्धांत के बिना क्रांतिकारी दल नहीं बन सकता' का तार्किक अर्थ यह भी है कि "क्रांतिकारी दल के बिना क्रांतिकारी सिद्धांत भी नहीं हो सकता।" इसका अर्थ यह हुआ कि कोई क्रांतिकारी सिद्धांत कितना भी सही क्यों न हो, उसे तब तक अमली जामा नहीं पहनाया जा सकता जब तक क्रांतिकारी सिद्धांत और क्रांतिकारी आचरण को अपने कार्यक्रम के माध्यम से एक सूत्र में पिरोने और

जनता को उसमें सम्मिलित करने के लिए कोई दल न हो। उनका यह विचार था कि तत्कालीन भारत में सही क्रांतिकारी सिद्धांत, केवल सर्वहारा समाजवादी क्रांति का सिद्धांत ही हो सकता है जो भारत के सामाजिक और आर्थिक ढांचे के समाजवादी परिवर्तन की प्रस्तावना की भूमिका निभा सकता है और ठोस सामाजिक और आर्थिक कारणों से यह परिवर्तन ऐतिहासिक दृष्टि से तात्कालिक और अपरिहार्य हो गया था। उनका विश्वास था कि उस संदर्भ में, 'क्रांतिकारी' राजनीतिक 'आचरण' वह 'आचरण' है जो सर्वहारा समाजवादी क्रांति के कार्यक्रम की दिशा में, प्रत्यक्षत: कदम-दर-कदम बढ़कर पूंजीवादी वर्ग के हाथों से राज्य-सत्ता को कामगारों के हाथों में देने और देश की अर्थव्यवस्था सामाजिक ढांचे में समाजवादी परिवर्तन लाने के लिए आवश्यक पूर्व-स्थितियां सृजित करता है।

रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी की भूमिका का वर्णन करते हुए त्रिदिब चौधरी ने टिप्पणी की:

"ऐतिहासिक रूप से रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी ने देश में वाम और मार्क्सवादी उन्मुखी जन आंदोलन के नए आचरण में भारत के पहले से चल रहे साम्राज्यवाद विरोधी और राष्ट्रीय क्रांतिकारी आंदोलन की महान परम्परा को आगे बढ़ाया है। आज राजनीतिक परिस्थिति और वर्ग शक्तियों के परस्पर संबंधों में 'सत्ता परिवर्तन' और राष्ट्रीय स्वाधीनता के बाद से व्यापक परिवर्तन आया है—श्रमिकों, किसानों और अन्य श्रमिक वर्गों को देश की आर्थिक और राजनीतिक संरचना के समाजवादी रूपांतरण के लिए श्रमिक वर्ग के नेतृत्व में पूंजीवाद और पूंजीपति वर्ग को उखाड़ फेंकने के लिए वर्ग संघर्ष की तर्ज पर संगठित होना है। रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी ने उन नए क्रांतिकारी कार्यों को यथासामर्थ्य संबोधित किया है जो राजनीति के वर्तमान स्वातंत्र्योत्तर चरण में आगे आए हैं।"

उन्होंने आगे टिप्पणी की:

"...रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी ने स्वातंत्र्योत्तर काल के नए राजनीतिक संदर्भ में वामपंथी और मार्क्सवादी दलों और इन दलों का संयुक्त मोर्चा बनाने में अपनी सार्थक भूमिका निभाने की कोशिश की है...मार्क्सवादी-लेनिनवादी श्रमिक वर्ग दल के रूप में इस पार्टी ने इन दशकों में मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा की अपनी स्वतंत्र समझ से राजनीतिक मार्गदर्शन प्राप्त करने की कोशिश की है। इस पार्टी ने अब तक जिस राजनीतिक धारा का अनुकरण किया है उसकी सफलता और सत्यता की सीमा का निर्णय भारत में समाजवादी श्रमिक वर्ग आंदोलन के केवल भावी विकास से किया जा सकता है।"

प्रतिष्ठित संसदविद्

त्रिदिब कुमार चौधरी पश्चिम बंगाल में बरहामपुर संसदीय क्षेत्र से लोक सभा के लिए लगातार सात बार चुने गए और सन् 1952 से 1984 तक लोक सभा के

सदस्य रहे। बाद में, वे जुलाई 1987 में और अगस्त 1993 में पुन: राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और अगस्त, 1993 से 21 दिसम्बर 1997 तक मृत्युपर्यन्त सदस्य रहे। वे संसद में रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी के नेता थे।

पहली लोक सभा के सदस्य के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, त्रिदिब कुमार चौधरी ने गोवा मुक्ति के लिए पुर्तगाली उपनिवेशवाद के विरुद्ध मुक्ति सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया। वह जुलाई, 1955 में स्वयंसेवियों के एक दल के साथ गोवा गए जहां पुर्तगाली शासकों ने उन्हें गिरफ्तार कर बारह वर्ष की सजा सुनाई। तथापि, वह बंदी बनाए जाने के 19 माह पश्चात्, वर्ष 1957 में दूसरी लोक सभा के चुनावों के समय ही रिहा हो गए। तत्कालीन प्रधानमंत्री और कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष पंडित जवाहर लाल नेहरू ने त्रिदिब चौधरी को 'राष्ट्रीय नायक' का दर्जा देते हुए उनके निर्वाचन-क्षेत्र में उनके विरुद्ध कांग्रेस का कोई उम्मीदवार खड़ा न करने का फैसला किया। 1974 में, संसद में पांचवें कार्यकाल के दौरान, उन्हें विपक्षी दलों के बहुमत से संयुक्त रूप से भारत के राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाया गया। यद्यपि वह चुनाव हार गए, तथापि जिस प्रकार राष्ट्रीय मुद्दों के आधार पर गरिमापूर्ण तरीके से यह चुनाव लड़ा गया, उसकी राजनैतिक वर्ग ने मुक्तभाव से सराहना की। आपातकाल के दौरान उन्होंने इसका विरोध कर रहे राजनैतिक दलों के प्रवक्ता के रूप में कार्य किया।

एक असाधारण संसदविद् के रूप में त्रिदिब चौधरी ने श्रमिकों और कृषकों के अधिकारों, न्यायपालिका की स्वतंत्रता, अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों, आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि, इत्यादि, जैसे विभिन्न मुद्दों पर गहरी रुचि दर्शायी। अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर लोक सभा और राज्य सभा में दिए गए उनके भाषणों से उनकी विषय पर गहरी पकड़, विश्लेषण-क्षमता, जमीनी समझ और असाधारण वक्तृत्व-क्षमता प्रकट होती है। वह लाखों मेहनतकश लोगों के समर्थक और दमित तथा पददलित वर्ग के रक्षक थे। वस्तुत: उन्होंने जनता के लोकतांत्रिक अधिकारों तथा स्वतंत्रता के दायरे को विस्तृत करने के लिए संघर्ष किया और इनके अतिक्रमण को चुनौती देते हुए उसका मुकाबला किया। उनके सभी भाषणों में साम्राज्यवाद-विरोध, सामाजिक प्रगति तथा समाजवादी देशों के साथ मित्रता के समर्थन सहित उक्ताशय की विचारधारा के दर्शन होते हैं।

संसद में प्रश्नकाल के दौरान त्रिदिब चौधरी काफी सक्रिय रहते थे। वह पैने प्रश्न पूछकर सरकार का ध्यान आकर्षित करने में पटु थे। बेरोजगारी, खाद्य की कमी, चाय उद्योग, जूट मिलों आदि के कर्मचारियों से जुड़े मुद्दे, श्रमिक-हितों, विदेश नीति, कृषि नीति इत्यादि विषयों पर वह प्रश्न करते थे। उन्होंने अपने प्रिय विषयों पर जनता की आवाज बुलंद की और उनकी शिकायतों का समाधान चाहा।

त्रिदिब चौधरी सभी संसदीय युक्तियों और रीतियों के अच्छे ज्ञाता थे और विभिन्न मुद्दों पर अपना दृष्टिकोण व्यक्त करने के लिए वह सभी संभव संसदीय तरीकों—

विशेष उल्लेख, ध्यानाकर्षण प्रस्ताव, आधे घंटे की चर्चा, स्थगन प्रस्ताव, इत्यादि, का सहारा लेते थे। इसके अलावा, विदेश नीति, राष्ट्रपति का अभिभाषण, वित्त विधेयक, विनियोग विधेयक और विभिन्न मंत्रालय के कार्यकरण पर चर्चा, जैसे प्रमुख अवसरों पर वह ठोस तर्कयुक्त जोरदार भाषणों से कार्यवाही को जीवंत बना देते थे। उन्होंने पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगलादेश) के लोगों की दीन दशा का बार-बार उल्लेख किया, उनके लोकतांत्रिक तथा मानवीय अधिकारों का समर्थन किया तथा इस विषय पर भारत द्वारा विश्व जनमत जुटाने की आवश्यकता पर काफी जोर दिया था।

त्रिदिब चौधरी को अनेक अवसरों पर संसद के दोनों सदनों में विभिन्न प्रकार के मुद्दों के विद्वतापूर्ण, प्रामाणिक, विचारोत्तेजक और समीक्षात्मक विश्लेषण के लिए स्मरण किया जाएगा। चर्चा में भाग लेने से पूर्व श्रमसाध्य और अध्यवसायी शोध, गहन तथा मर्मपूर्ण विचार, आत्मविश्वास तथा बेलागपन जैसे गुणों के कारण ही वह एक विशिष्ट संसदविद् थे। सभासद उनके व्यावहारिक विचारों तथा ठोस सुझावों को बड़े आदर के साथ सुनते थे। गरिमापूर्ण व्यक्तित्व के धनी, मृदुभाषी तथा मित्रों व विरोधियों दोनों के साथ सौजन्यतापूर्ण व्यवहार करने वाले त्रिदिब कुमार चौधरी को राजनीतिक हलकों में काफी आदर प्राप्त होता था।

प्रख्यात मजदूर संघ नेता

कामगारों, मजदूरों, कृषक व खेतिहर वर्ग, नौजवानों और छात्रों के अभिन्न मित्र व समर्थक, त्रिदिब चौधरी विभिन्न मजदूर संघों और उनके कल्याण संगठनों से जुड़े रहे। उन्होंने यूनाइटेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस (यू.टी.यू.सी.), जो रिवाल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी का मजदूर संघ स्कंध था, में वरिष्ठ पदाधिकारी के रूप में कार्य किया। वह रोजगार नीतियों, कर्मचारियों के अधिकारियों, मजदूर-संघों को मान्यता देने, प्रबंधन में कामगारों की भागीदारी, मजदूर-संघों की हड़ताल, कामगार तथा उनके पारिश्रमिक, पददलितों के उन्नयन, आदि मामलों को सभा में मुखरतापूर्वक उठाने का कोई भी मौका नहीं चूकते थे। ऐसे सभी अवसरों पर वह बहुत जोश के साथ बोलते। रोजगार और श्रमिकों से संबंधित मुद्दों पर उनका विशेष ध्यान रहता था।

साहित्यिक उपलब्धियां

कुशल वक्ता होने के साथ-साथ त्रिदिब चौधरी ने एक बहुसर्जक लेखक के रूप में भी ख्याति अर्जित की। त्रिदिब चौधरी के प्रमुख योगदानों में से एक भारतीय राजनीति में वामपंथी आंदोलन, जिसका प्रतिनिधित्व रिवाल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी करती थी, में एक स्वतंत्र तथा अपरंपरावादी मार्क्सवादी विचारधारा के प्रवक्ता के रूप में रहा। वह रिवाल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी के मुखपत्र 'कॉल' के संपादक रहे। 1950 के दशक के अंत में बंगला भाषा में उनके गोवा सत्याग्रह के संस्मरण

'नाइनटीन मंथ्स इन सालाजार्स प्रिजन' (सालाजार कारावास में उन्नीस माह) पहली बार प्रकाशित होने पर उन्हें काफी लोकप्रियता मिली। डा. नीहार रंजन राय के साथ वह प्रख्यात बंगला साहित्यिक-सांस्कृतिक मासिक पत्रिका 'क्रांति' के कई वर्षों तक संयुक्त संपादक रहे। उन्होंने समसामयिक मुद्दों पर रिवाल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी की विचारधारा दर्शाने वाले अनेक राजनीतिक व वाद-विवादपूर्ण लेख लिखे। तीन दशकों से भी अधिक समय तक रि.सो.पा. के महासचिव के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने 1970 में 'व्हाइ आर.एस.पी.?' (हिस्टॅरिक नीड फार ए पार्टी आफ सोशलिस्ट रिवाल्यूशन इन इंडिया टुडे) और 1985 में 'फोर एंड हॉफ डिकेड्स ऑफ द आर.एस.पी.' शीर्षक से दो पुस्तिकाओं का लेखन किया।

निधन और श्रद्धांजलि

त्रिदिब चौधरी अविवाहित रहे। रहन-सहन और परिधान के मामले में वह ठेठ बंगाली थे और सामान्यतया एक सादी धोती और कुर्ता पहनते थे। जीवन और सामाजिक-धार्मिक कार्यकलापों के प्रति उनकी आम धारणा, सभी मार्क्सवादियों की तरह, वैज्ञानिक और पंथनिरपेक्षता की थी।

त्रिदिब चौधरी का देहावसान 21 दिसम्बर 1997 को 86 वर्ष की आयु में हुआ, तब वह राज्य सभा के सदस्य और संसद में रिवाल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी के नेता थे। तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के.आर. नारायणन ने उनके निधन पर अपने संदेश में दुख और शोक व्यक्त करते हुए स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भूमिका का स्मरण किया। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री आई.के. गुजराल ने उनके निधन पर संवेदना व्यक्त करते हुए उन्हें "एक कुशल सांसद और पददलित वर्ग का समर्थक" बताया। त्रिदिब चौधरी को भावभानी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए राज्य सभा के तत्कालीन सभापति श्री कृष्णकांत ने कहा: "श्री त्रिदिब चौधरी के निधन से देश ने एक दिग्गज स्वतंत्रता सेनानी और प्रखर संसदविद् खो दिया है।" त्रिदिब चौधरी के निधन पर लोक सभा के तत्कालीन अस्थायी अध्यक्ष श्री इंद्रजीत गुप्त ने सभा में निधन संबंधी उल्लेख में उन्हें एक वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी, कुशल संसदविद्, विद्वान तथा सक्रिय सामाजिक कार्यकर्त्ता बताया जिसने श्रमिक वर्ग, युवाओं तथा मजदूर संघों की उन्नति के लिए अथक प्रयास किए।

त्रिदिब कुमार चौधरी

-चित्रात्मक झांकी-

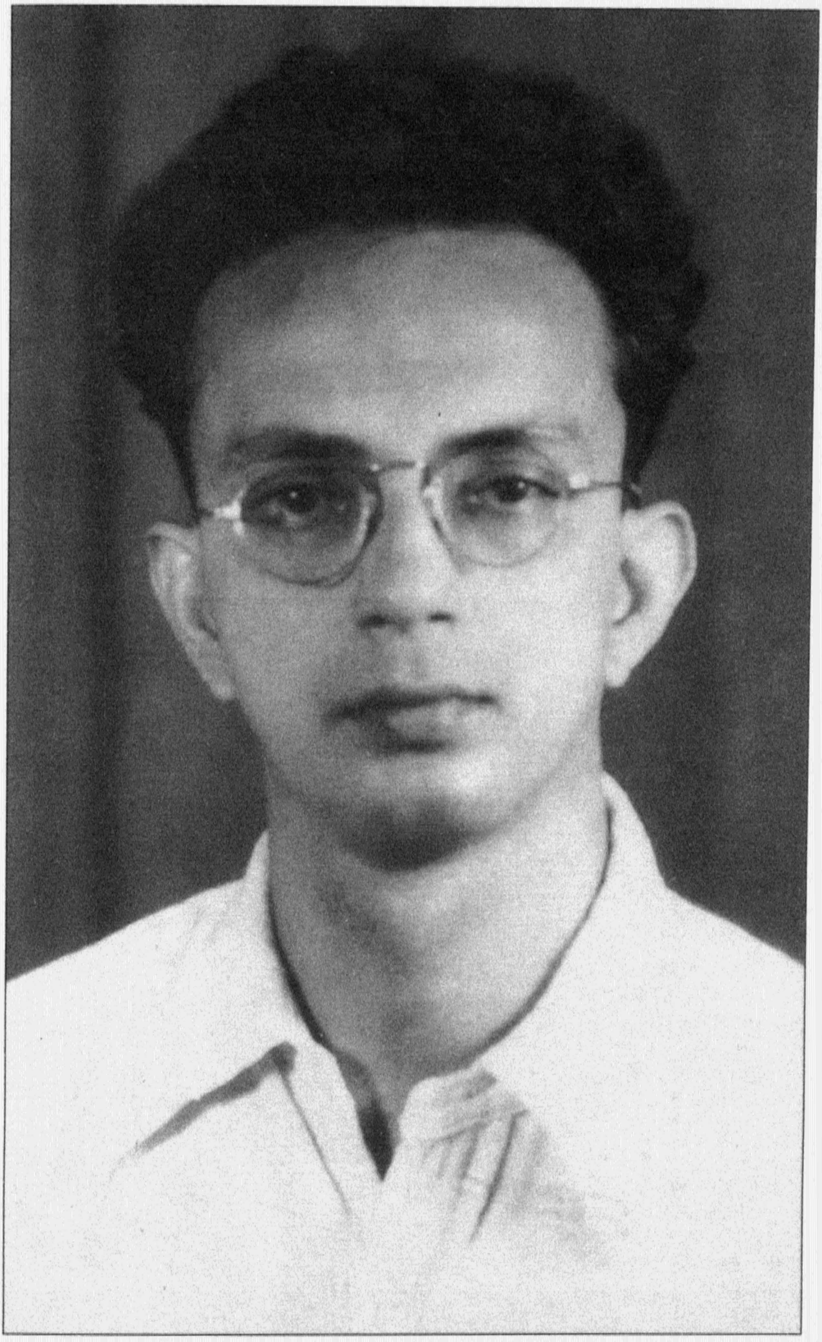

त्रिदिब कुमार चौधरी युवावस्था में

त्रिदिब चौधरी विचारमग्न मुद्रा में

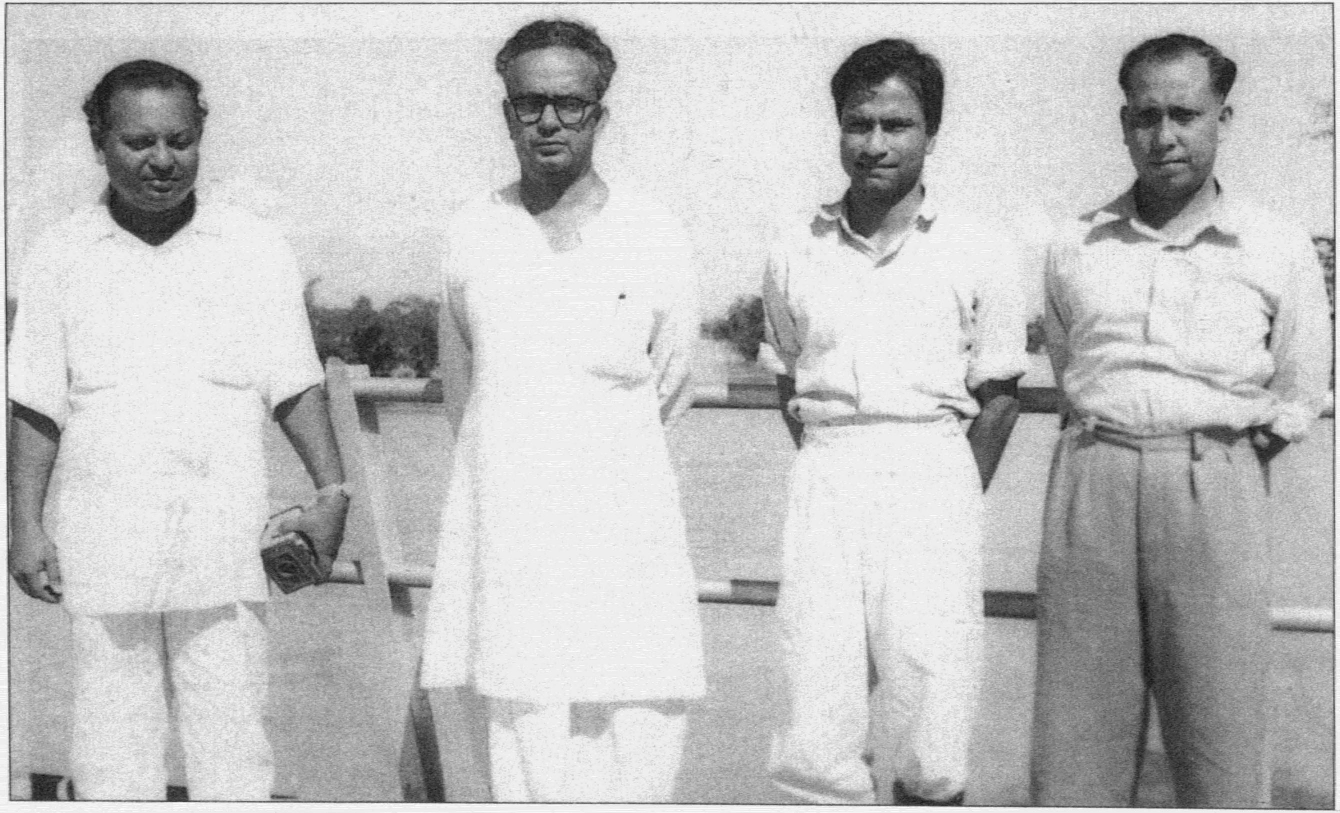

त्रिदिब चौधरी 1953 में मुर्शिदाबाद में अपने सहकर्मियों के साथ बाढ़ राहत कार्य करते हुए

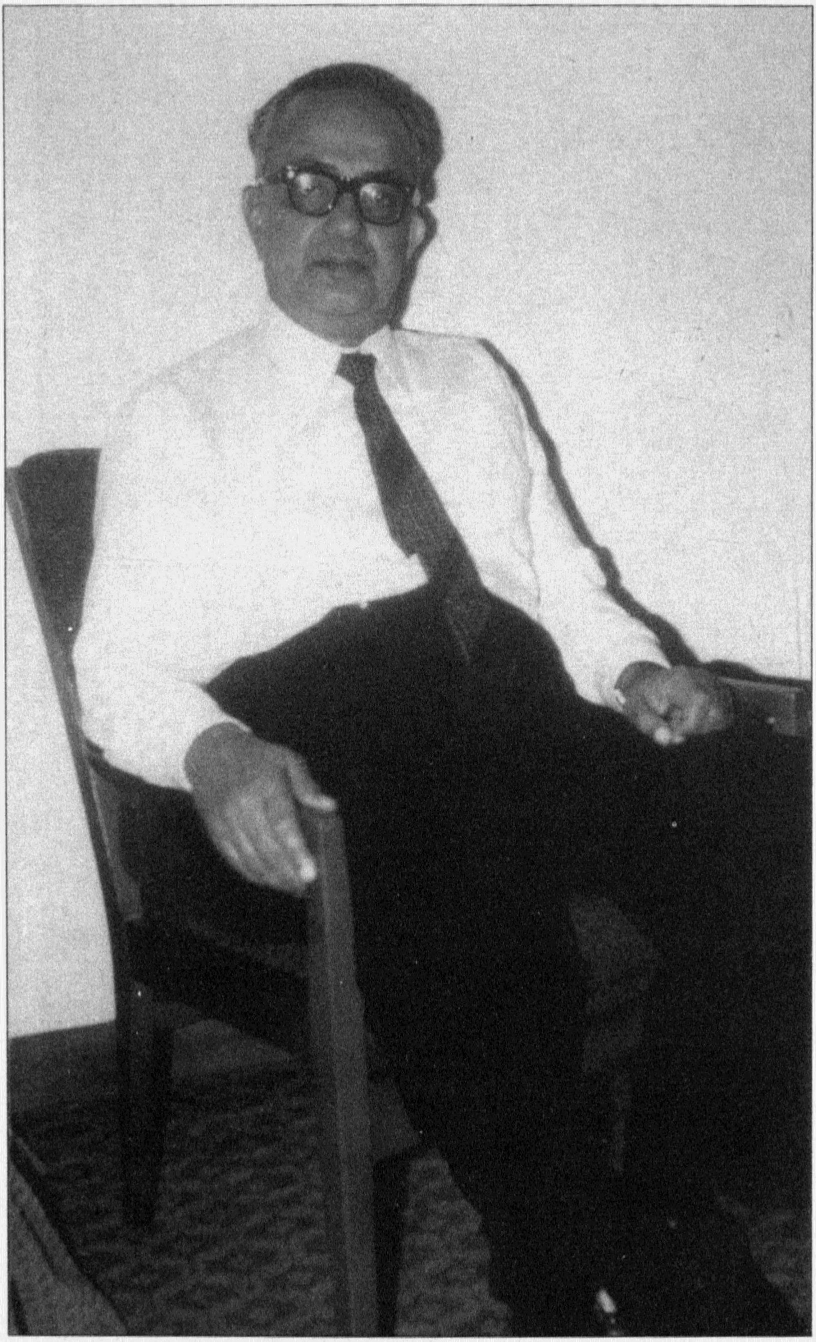

1972 में लंदन यात्रा के दौरान लंदन के सैंट इरमिन्स हॉस्टल में

1972 में लंदन यात्रा के दौरान यॉर्कशायर के इंडिया क्लब में

लंदन में मित्रों के साथ

त्रिदिब चौधरी और लोक सभा के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. जी.एस. ढिल्लों
जून-जुलाई 1974 में रूस में

1974 में रूस यात्रा के दौरान

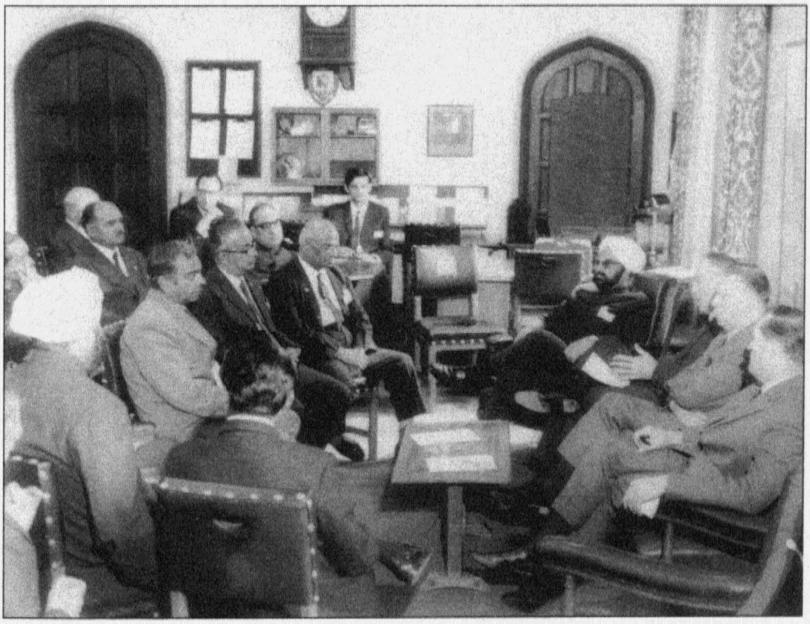

1974 में सोवियत नेताओं के साथ

1974 में अपनी रूस यात्रा के दौरान

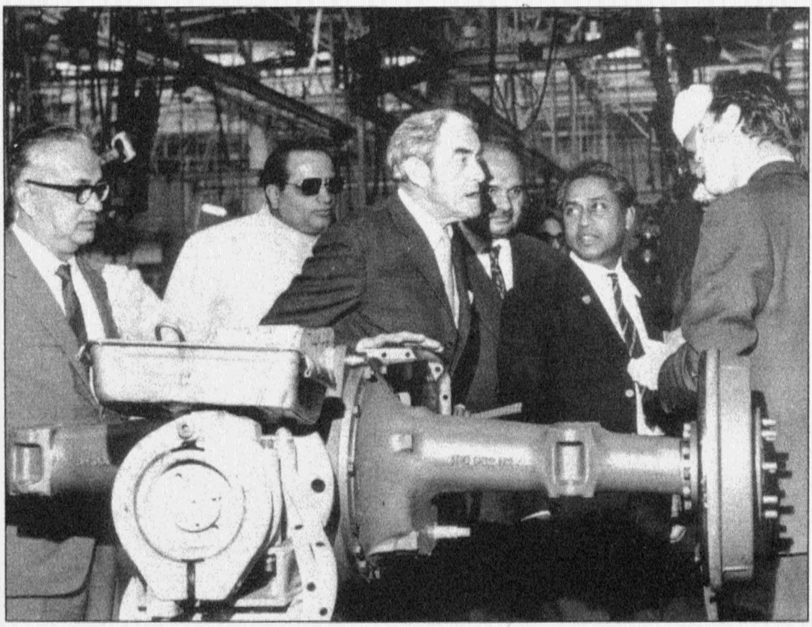

1974 में रूस में एक औद्योगिक परिसर में

1974 में अपनी रूस यात्रा के दौरान

1985 में नई दिल्ली के मावलंकर सभागार में रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी के चौदहवें राष्ट्रीय सम्मेलन में पार्टी नेताओं के साथ

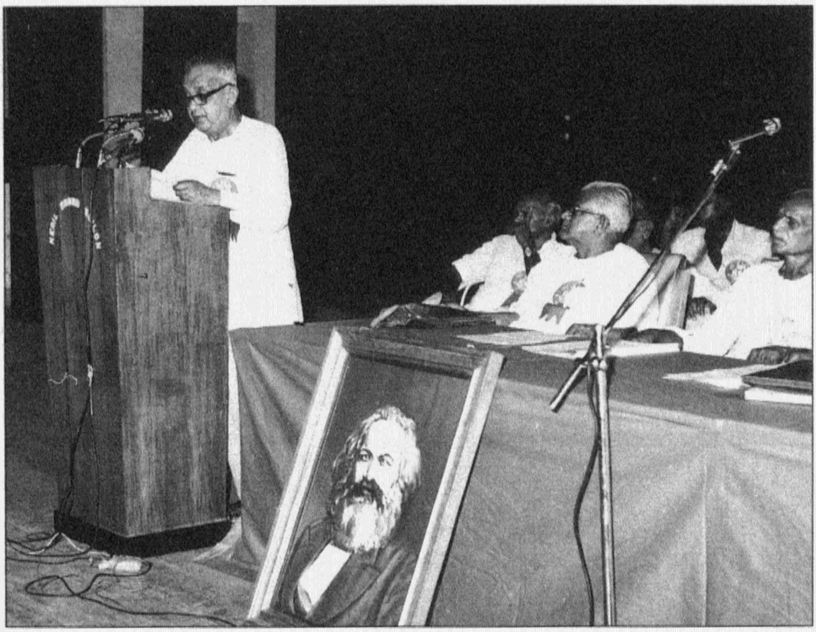

वर्ष 1986 में स्वतंत्रता सेनानी और किसान नेता बालरूप शर्मा तथा प्रतुल चौधरी के साथ एक बैठक को संबोधित करते हुए श्री त्रिदिब चौधरी

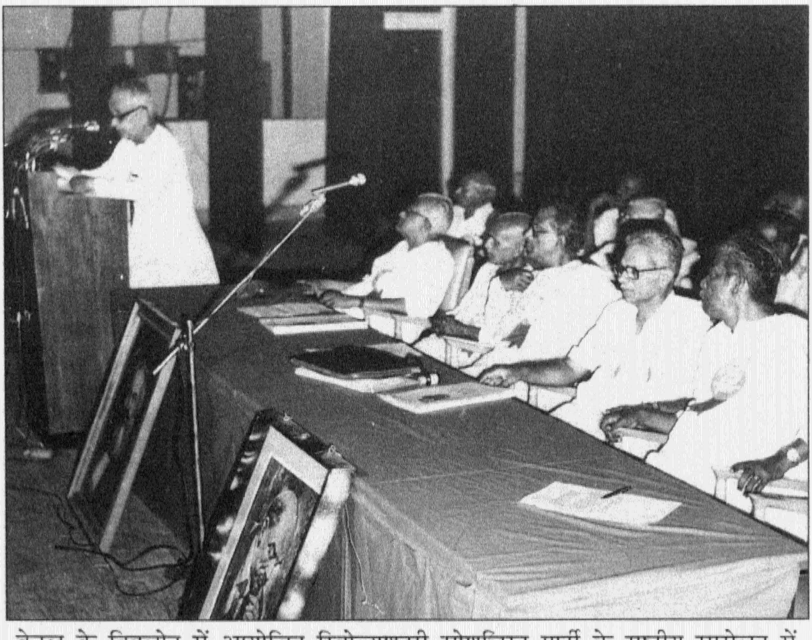

केरल के क्विलोन में आयोजित रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए

केरल के क्विलोन में शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए

केरल के क्विलोन में पार्टी नेताओं के साथ

रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्यों के साथ

केरल के त्रिवेन्द्रम में रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओं से सलामी लेते हुए

त्रिवेन्द्रम में रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओं के जुलूस का नेतृत्व करते हुए

त्रिवेन्द्रम में दिवंगत कॉमरेडों और शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए

त्रिवेन्द्रम में रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी के नेताओं के साथ

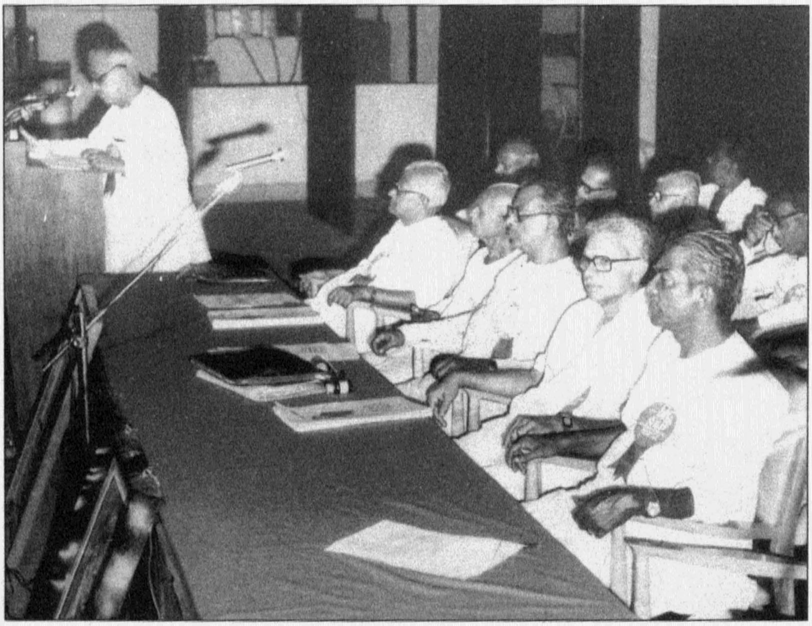

त्रिवेन्द्रम में पार्टी प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए

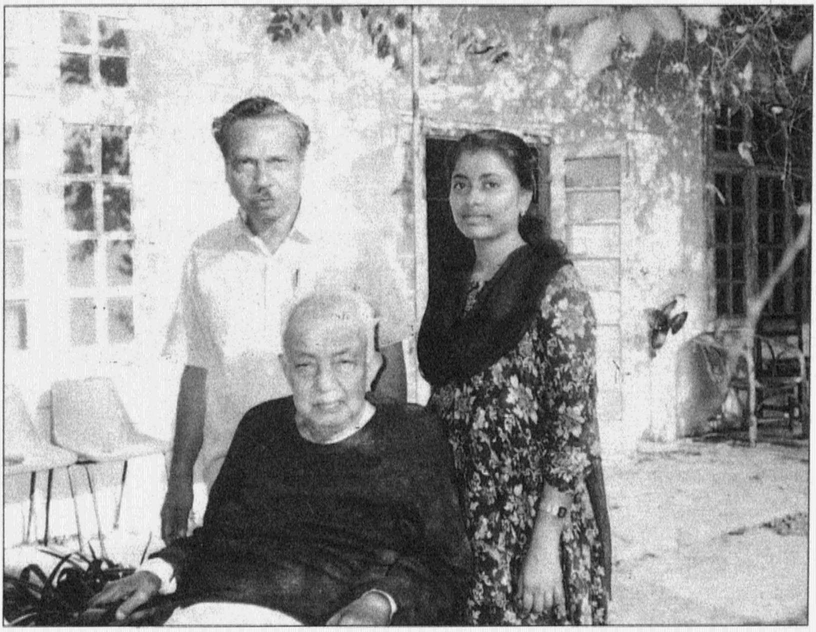

त्रिदिब चौधरी 1995 में राज्य सभा के सदस्य श्री अबनी रॉय और एक विद्यार्थी के साथ

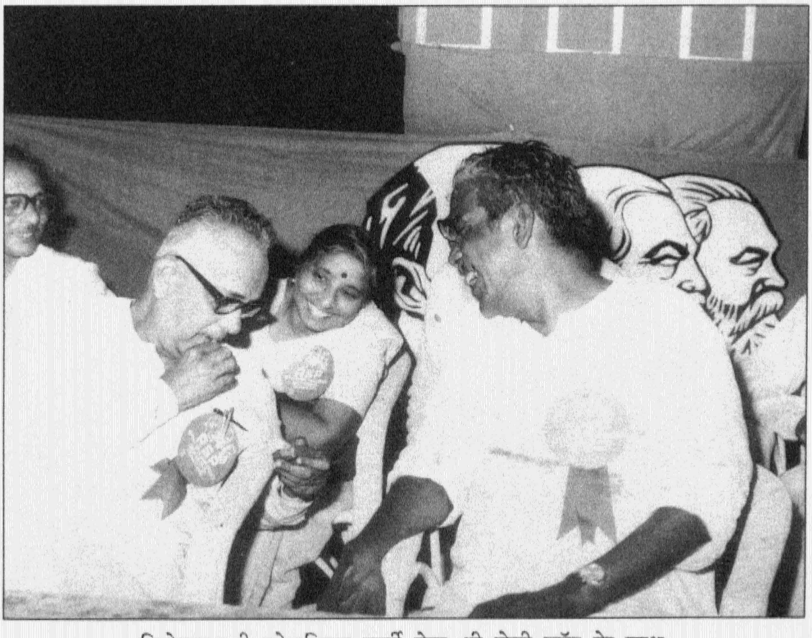

रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी नेता श्री बेबी जॉन के साथ

1976 में ताजमहल परिसर में

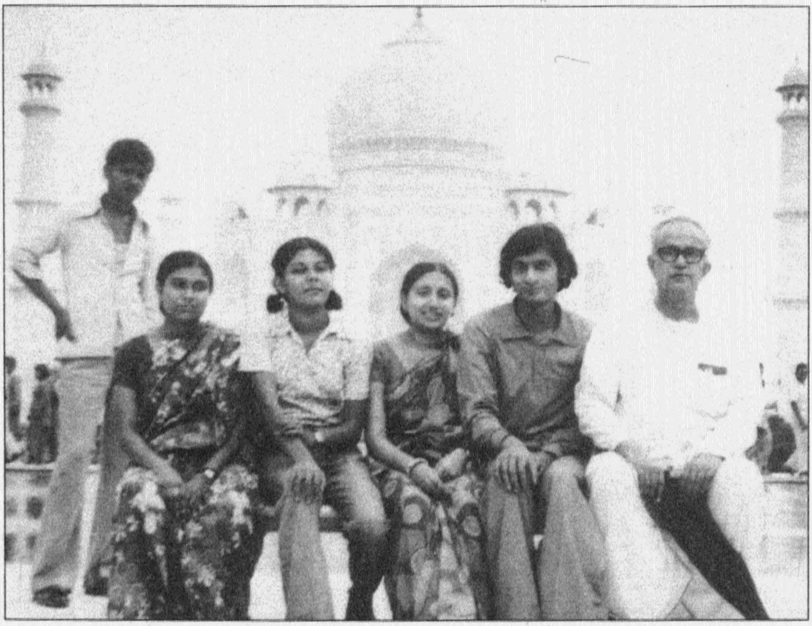

1976 में परिवार के सदस्यों के साथ ताजमहल परिसर में

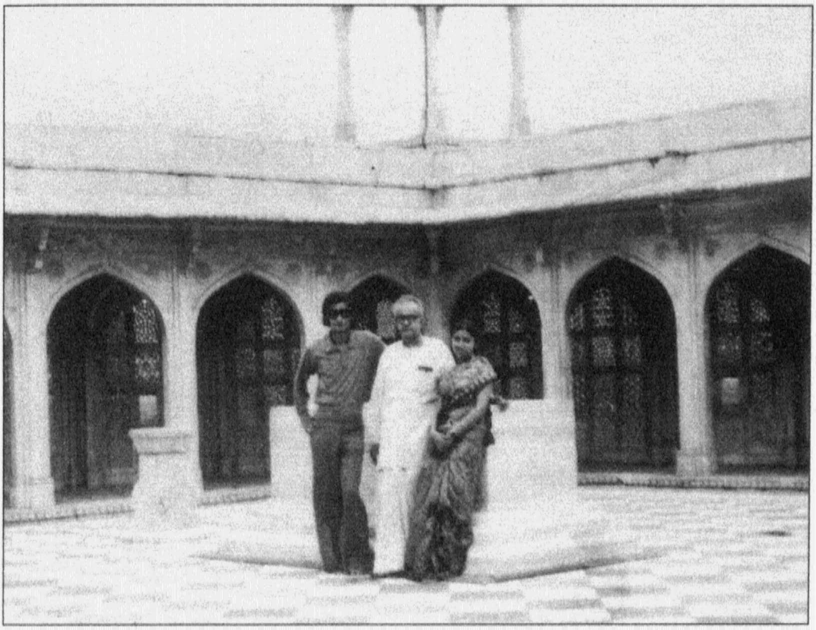

1976 में फतेहपुर सीकरी में

1981 में अपनी पोती के साथ

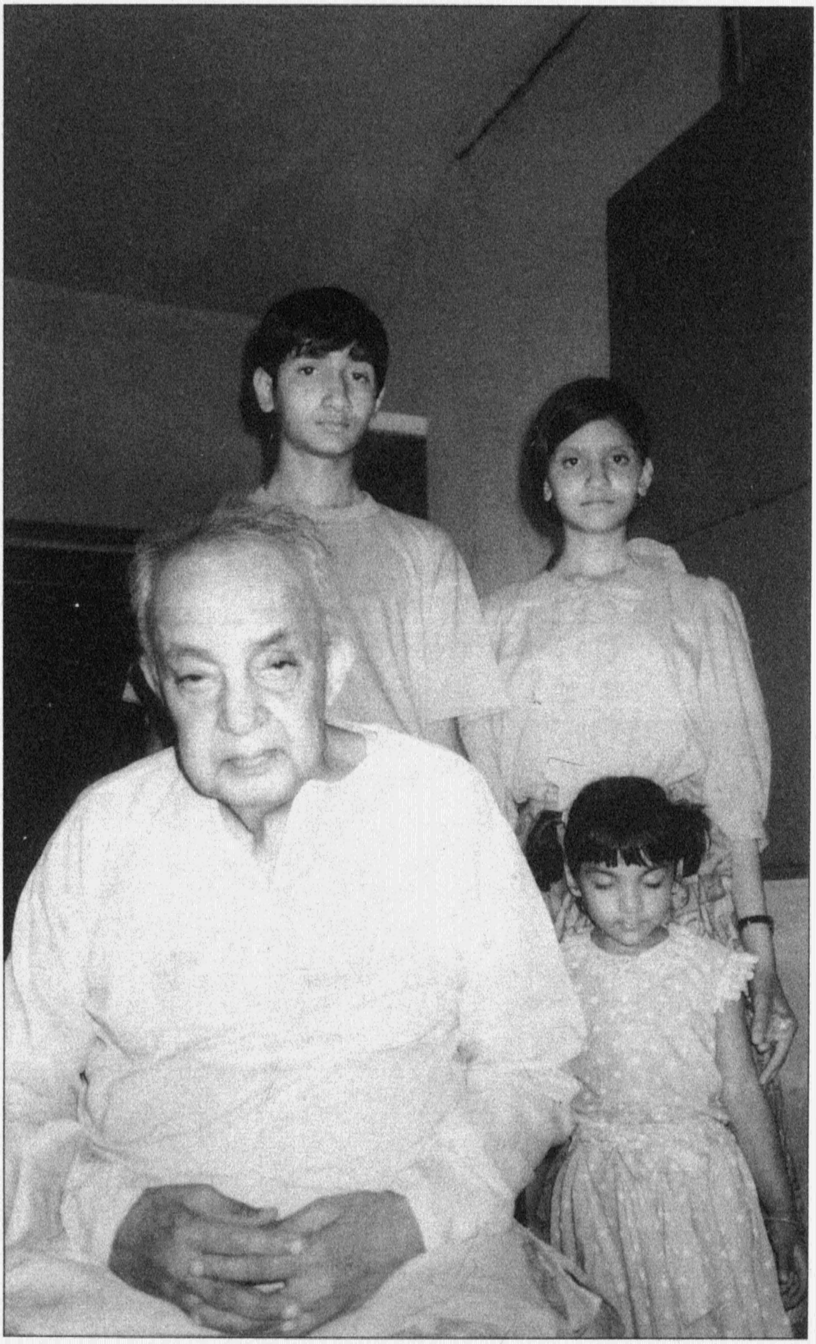

अपने पोते-पोती के साथ 1995 में

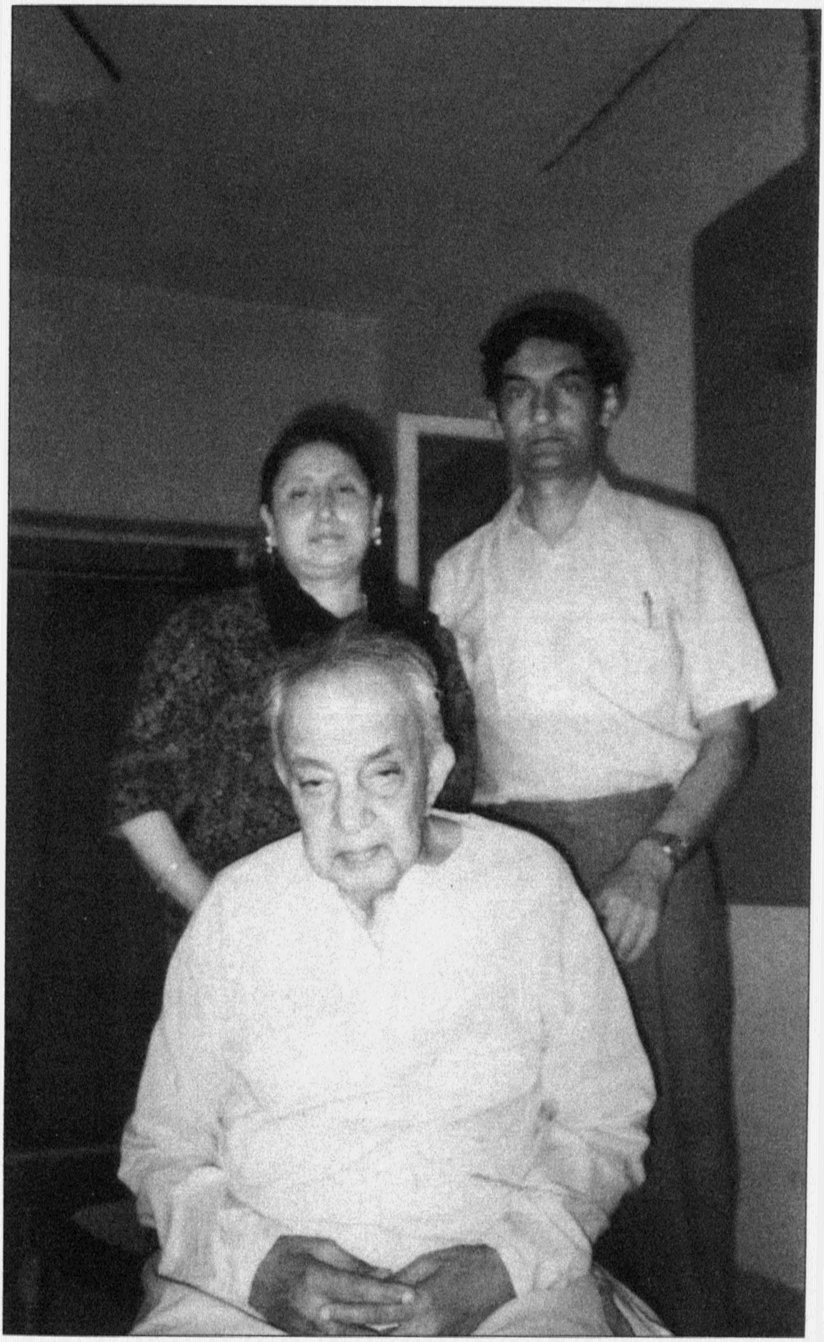

सर्मिष्ठा सान्याल और उनके पति के साथ 1995 में

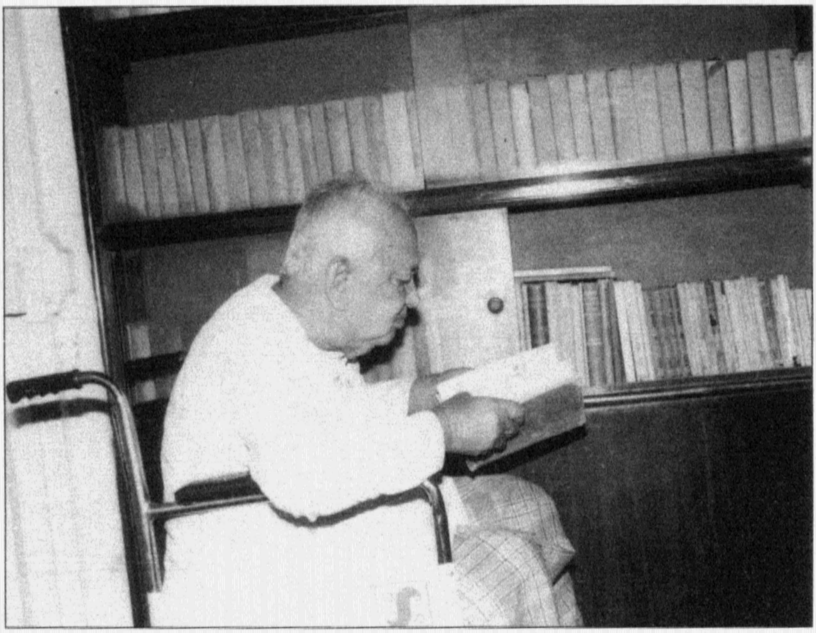

अपने अध्ययन कक्ष में

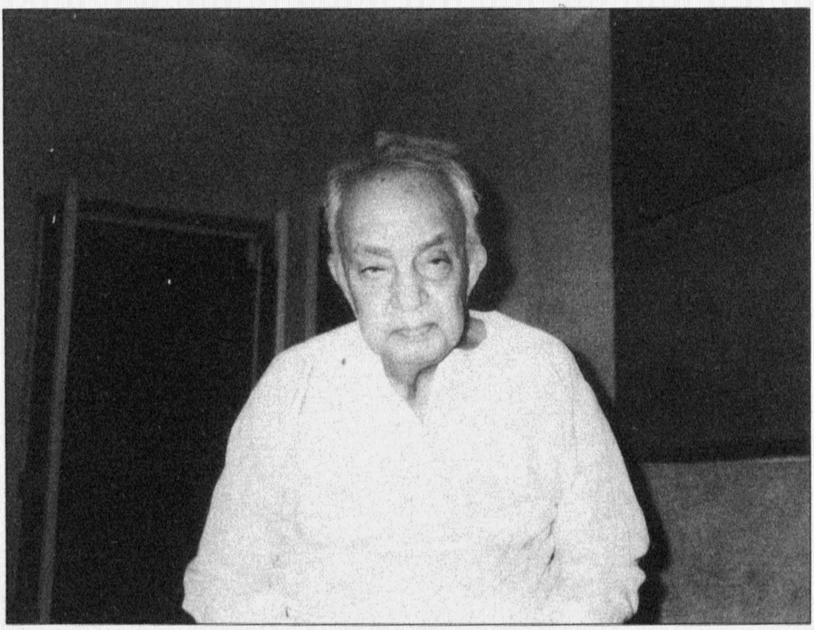

त्रिदिब कुमार चौधरी वृद्धावस्था में